© 2019 IJSRSET | Volume 6 | Issue 2 | Print ISSN: 2395-1990 | Online ISSN : 2394-4099
Themed Section : Education

मन्नू भंडारी और शिवानी की कहानियों में परिवेशबोध

सुनील कुमार
शोधार्थी, हिंदी विभाग,
एम०एम०एच०कॉलेज,
ग़ाज़ियाबाद,भारत।

मन्नू भंडारी और शिवानी नई कहानी आंदोलन की महत्वपूर्ण कथाकार है। इन दोनों ही कथाकारों के लेखन का आधार स्त्री जीवन की विसंगतियाँ और विडंबनाएं हैं। स्त्री जीवन की विसंगतियों और विडंबनाओं पर लिखते हुए मन्नू भंडारी और शिवानी ने जिस परिवेश का निर्माण किया है उसे इनकी कहानियों के आधार पर देखा जा सकता है। नई कहानी आंदोलन का आरंभ जिस परिवेश में हो रहा था आज़ाद भारत के शुरुआती दिनों का परिवेश है जिसमें नई-नई मिली हुई आज़ादी के प्रति एक खास तरह का रागात्मक लगाव हिंदुस्तान की जनता के मन में मौजूद था। आज़ादी की लड़ाई के दौरान जो सपने देखे गए थे अब उनके पूरे होने के दिन आ गए थे। आज़ादी मिलने और संविधान लागू होने के साथ ही हिंदुस्तान ने एक नई हवा में सांस लेना शुरू किया। लेकिन यह सब बहुत दिनों तक कायम नहीं रह सका। जल्द ही आज़ादी की लड़ाई के दौरान के विकसित जीवन मूल्य नष्ट होने लगे, आज़ादी झूठी लगने लगी। भारतीय लोकतंत्र और भारतीय राष्ट्र राज्य के अंतर्द्वंद्व सामने आने शुरू हो गए। कहा गया था कि आजादी मिलते ही देश की सभी समस्याएं खत्म हो जाएंगी। सबको अपना अपना हक मिल जाएगा पर असलियत में ऐसा कुछ भी नहीं हुआ। परिणाम निकला कि हर वर्ग की तरफ से आवाज आने लगी की है आज़ादी झूठी है। स्त्री लेखिकाओं ने हजारों सालों से द्वितीय श्रेणी की नागरिकता का जीवन जी रही स्त्रियों के हक हुकूक की बात शुरू की। मन्नू भंडारी और शिवानी की कहानियों में परिवेशगत चित्रण को इसी नजरिए से देखने की जरूरत है।

मन्नू भंडारी की कहानियों में परिवेशबोध:

मन्नू भंडारी और शिवानी की कहानियों का परिवेशगत बोध आज़ाद भारत में स्त्री की दशा और दिशा को व्यक्त करता है। मन्नू भंडारी और शिवानी अपनी कहानियों में जिस परिवेश का चित्रण करती हैं उन्हें अगर हम उनकी कहानियों के कथानक और चरित्रों के साथ देखें तो बात ज्यादा स्पष्टता के साथ सामने आएगी। इन दोनों कथाकारों के यहाँ स्त्री अपने यथार्थ जीवन की विडंबनाओं के साथ उपस्थित हुई है। किसी तरह के आदर्शवाद के चक्कर में न फँसकर इन कथाकारों ने स्त्री जीवन को जैसे जिया, अनुभव किया और देखा वैसे ही अपनी कहानियों में दर्ज कर दिया। मन्नू भंडारी की कहानियों के कथ्य में आत्मविस्तार और संवेदना का फैलाव ही अधिक है क्योंकि अपने अत्यंत व्यक्तिगत और एकांत अनुभवों को कहानी के चरित्रों और स्थितियों के बीच रख देना या अपने से अलग कहानी की दुनिया से अपना व्यक्तिगत निकाल लेना ही काला को एक साथर्कता देता है, सर्वजनीनता देता है। जिन रचनाओं में अपनी और दूसरों की बात इस तरह घुल मिल गयी है, वे इतनी अधिक संभावनाओं से भरी होती है कि

प्रायः समय-समय पर उनकी नई व्याख्याएँ और नए पक्षों का उदघाटन होता रहता है । व्यक्तिगत अनुभव निर्वैयक्तिक होकर ही सत्य का दर्जा पा सकता है । पारिवारिक प्रेम और दांपत्य जीवन की नई सच्चाई यों को मनु भंडारी ने बड़े साहस और निर्भीकता के साथ अपनी कहानियों में आँका है। ऐसा करते हुए उनके द्वारा निर्मित परिवेश यथार्थ जीवन को व्यक्त करने में सहायक सिद्ध होता हुआ दिखाई देता है। वर्तमान संदर्भों में अपने ही घर परिवार में नारी आउट साइडर या मिसफिट होने की पीड़ा झेलती है तो अपने विवेक के आधार पर चलने की सामर्थ्य भी रखती है और शरीर से दूसरी की होकर भी मन की ऊंचाई पर पति-पत्नी के संबंधों की पवित्रता बचाए रखती है। क्योंकि यदि संबंधों का आधार इतना छिछला है, इतना कमजोर है कि वह हर पुरुष के स्पर्श मात्र से खंडित हो जाता है तो सचमुच उसे टूट ही जाना चाहिए। इस संदर्भ में हम चाहें तो यही सच है कहानी को देख सकते हैं। यह आजकल के स्त्री पुरुषों के संबंधों में आई नई सच्चाई है जिसे मन्नू भंडारी की कहानियों में बड़ी ईमानदारी के साथ अभिव्यक्ति दी गई है।

इसी प्रकार प्रेम के पुराने संदर्भ को भी आधुनिक जीवन बोध से जोड़कर मन्नू भंडारी ने उसे नई अर्थवत्ता प्रदान की है। यही सच है कहानी मे क्षण की अनुभूति को व्यापक धरातल पर चित्रित किया गया है। मन्नू भंडारी की कहानियों की आंतरिक संरचना यातना और करुणा से भरी हुई है। इनमें जीवन को देखने, उसे समझने और जीने की एक नई दृष्टि मिलती है। सुखद और उल्लासपूर्ण क्षणों में व्यक्ति अपने से बाहर और औरों के साथ होता है जबकि यातना के क्षण में वह अपने बेहद क्रिब होता चला जाता है। मन्नू भंडारी की कहानियाँ पर से स्व की यात्रा की कहानियाँ है।

कथ्य की दृष्टि से देखे तो मन्नू भंडारी की कहानियों में वैविध्य दिखाई देता है। यह वैविध्य उनके द्वारा चयनित परिवेशबोध की वजह से संभव हुआ है। मन्नू भंडारी ने व्यापक स्तर पर हिन्दी समाज के यथार्थ को अपनी कहानियों का विषय बनाया है। उनकी कहानियों में जहां एक तरफ यही सच है जैसी प्रेम के त्रिकोण की कहानी है तो वहीं अभिनेता जैसी कहानी भी शामिल है। मन्नू भंडारी की कहानियाँ चाहे जिन विषयों से शुरू होती हो अंत में वे जहां जाकर समाप्त होती हैं वहां स्त्री जीवन की त्रासद सच्चाई ही दिखाई देती है। मन्नू भंडारी की प्रेम विषयक कहानियों में भी यातना ही मौजूद है। स्त्री के यातनापूर्ण जीवन को अभिव्यक्त करने का सबसे सशक्त माध्यम मनु भंडारी ने अपनी कहानियों को बनाया है। वातावरण और परिवेश निर्माण के लिए मन्नू भंडारी ने उपयुक्त और सशक्त भाषा का प्रयोग किया है, जिससे नारी ह्रदय के सूक्ष्म से सूक्ष्म भावतन्तु भी झंकृत हो सके हैं। देश काल और परिस्थितियों के अनुसार मन्नू भंडारी की कहानियों का भाषिक अंदाज भी बदलता गया है। इससे जो सबसे बड़ा लाभ हुआ है वह यह है कि कहानी के कथ्य संप्रेक्षण में बहुत मदद मिली है। मन्नू भंडारी की कहानियों में गत्यात्मक बिम्बों, प्रतीकोण तथा संकेतों की आयोजना हुई है। रूप विधान में सहज आत्मीयता एवं विश्वसनीयता की सृष्टि के लिए मन्नू भंडारी ने पत्र और डायरी आदि कथाशैलियों को अपनाया है। इसमें दुहरे कथानक तथा संश्लिष्ट शैली का भी प्रयोग दिखाई देता है। मन्नू भंडारी की कहानियां अपने कथ्य में जितनी स्पष्टता और बेबाकी का परिचय देती हैं अपने शिल्पगत प्रयोग में भी वे उतनी ही स्पष्ट हैं। मन्नू भंडारी की कहानियों का परिवेश आज़ाद भारत के उन वर्षों का परिवेश है जिसमें भारत के आधुनिक राष्ट्र- राज्य बनने की प्रक्रिया चल रही थी। कहानी स्वरूप और संवेदना नामक अपनी पुस्तक में राजेंद्र यादव ने लिखा है-" इस पीढ़ी के लिए यह आसान नहीं है कि वह अपने साहित्य के प्रति ईमानदारी का सही-सही निर्वाह कर सकें। परिणामत: नई कहानी का विखराव, जटिलता, अस्पष्टता, आस्था हीनता

आज के मानस की ही तस्वीर सामने रखती है। हां,एक संतोष हमें जरूर होना चाहिए कि चाहे इन कहानियों का स्वर निर्माण और आशा का ना हो लेकिन अपनी विशदता और विविधता में देश और समाज के हर स्तर को आज की कहानी में पाने की कोशिश की है। वह कश्मीर की रंगीन घाटियों से लेकर अल्मोड़ा और नेपाल की तराइयों तक और बस्तर और नागपुर की आदिम जनजातियों से लेकर कलकत्ता और बंबई के अत्याधुनिक नाइट कैम्बरों तक अपनी बहन फैलाए हैं"।[1] राजेंद्र जी द्वारा कही गई बात उसी समय की कहानी के बारे में है जिस समय में मन्नू भंडारी का लेखन देखने को मिलता है । मन्नू जी ने अपनी कहानियों में भारतीय जनता के जीवन यथार्थ को तो दर्ज किया ही स्त्री जीवन के संत्रास को भी जगह दिया। उनकी कहानियों का परिवेश बोध आधुनिक मानवीय जीवन की संवेदना को अभिव्यक्त करने का माध्यम बनकर हमारे सामने उपस्थित होता है।

शिवानी की कहानियों में परिवेशबोध: हिन्दी कहानी के इतिहास में नई कहानी का अपना अलग महत्व है। नई कहानी आंदोलन के दौरान जिन कथाकारों ने अपने लेखन के माध्यम से अपनी अलग पहचान दर्ज कराई उनमें शिवानी का नाम बेहद महत्व के साथ लिया जाता है। शिवानी ने दर्जनों उपन्यास और दो सौ के आसपास कहानियों का लेखन किया है। उनकी कहानियां स्त्री जीवन के दुख दर्द को अभिव्यक्त करने का माध्यम बनकर हमारे सामने उपस्थित हुई हैं। शिवानी के लेखन की सबसे बड़ी विशिष्टता यह रही है कि उन्होंने व्यक्ति और समाज के बीच रूढ विभाजन को किसी भी तरह स्वीकार नहीं किया है। जहां वे सामाजिक जीवन संदर्भों में सामाजिक विसंगतियों और विडंबनाओ को दर्ज करती हैं वही व्यक्ति मन की कुंठाओ और विसंगतियों को भी स्थान देती हैं।

[1] कहानी: स्वरूप और संवेदना, राजेंद्र यादव, पृष्ठ-82, राजकमल प्रकाशन समूह नई दिल्ली

शिवानी के विस्तृत लेखन का क्षेत्र विविधताओं से भरा हुआ है। उनके लेखन में जहां एक तरफ सामाजिक ताने-बाने में बंधी हुई स्त्री जीवन की करुणा और पीड़ा व्यक्त हुई है वहीं दूसरी तरफ वे प्रेम और आह्लाद पर भी पर्याप्त लेखन करती हुई दिखाई देती हैं। उनके लेखन का क्षेत्र मन्नू भंडारी या दूसरी कथाकारों की तरह सीमित नहीं है। उन्होंने अपने लेखन को विस्तार दिया तो संवेदना के धरातल को भी वैविध्य प्रदान किया। लाल हवेली जैसी कहानी विभाजन और विस्थापन की त्रासद स्थिति में जीवन के यथार्थ को व्यक्त करती है । एक तरफ जहां लाल हवेली प्रेम की प्ररिक बनकर उपस्थित होती है वहीं दूसरी तरफ वह सांप्रदायिक विद्वेष और स्त्री पीड़ा का भी प्रतीक बनकर उपस्थित हुई है। इसी तरह दूसरी तमाम कहानियाँ जिनमें प्रेम और करुणा एकसाथ उपस्थित हुए हैं वह भी शिवानी के विभाजित मन की शिनाख्त करती हैं। शिवानी का लेखन जितना विस्तृत है उनका परिवेश भी उतना ही विस्तार पाता गया है। यूं तो उनके लेखन में जो परिवेश चित्रित हुआ है वह पहाड़ी क्षेत्र का मध्यवर्गीय जीवन है लेकिन सिर्फ वही नहीं है। शिवानी का बहुत गहरा रिश्ता पहाड़ी जीवन से रहा है इसलिए उनके लेखन में बार-बार पहाड़ का स्मरण किसी पात्र की तरह होता है। शिवानी के लेखन में पहाड़ हमेशा मौजूद दिखाई देता है। पहाड़ के साथ ही मौजूद दिखाई देता है मध्यवर्गीय भारतीय आम जनमानस। इस मध्यवर्गीय मानस को शिवानी ने अपनी कहानियों का आधार तो बनाया लेकिन उनकी चिंता हमेशा इसे पार कर एक ऐसे लोग में विचरण करने की रही जहां अभावग्रस्त जीवन जीते हुए लोग दिखाई देते हैं। शिवानी के लेखन में अभावग्रस्त जीवन के जीतने प्रामाणिक हितरा दर्ज हुए हैं उतने उनके समकालीन कथाकारों में किसी के यहाँ नहीं दर्ज हुए हैं। जिलाधीश,अपराजिता,उपहार, केया, लाल हवेली, गहरी नींद और निर्माण जैसी कहानियों में भले ही स्यतरी चरित्र आर्थिक रुप से सम्पन्न और सुखी से दिखने वाले हों पर

उनके मन की गाँठे जहां खोलकर शिवानी ने रखा है वहाँ पाठक देखता है कि स्त्री आर्थिक रूप से सबल हो जाने मात्र से जरूरी नहीं है कि सुखी हो ही जाए। सुखी जीवन जीने में और आर्थिक रूप से सबल होने में बहुत अंतर है। शिवानी की कहानियाँ इस अंतर को अलग-अलग परिवेश के माध्यम से व्यक्त करने में सफल सिद्ध हुई हैं।

शिवानी ने कुरमाञचल संस्कृति में व्याप्त तंत्र, मंत्र, टोने, टोटके एवं अंधविश्वास को एक सामाजिक समस्या के रूप में लेकर उसका निदान प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। इन घटनाओं का चित्रण बिना पहाड़ी परिवेश को व्यक्त किए कर पाना संभव ही नहीं था इसलिए इनमें भी पहाड़ी जीवन का परिवेश व्यक्त होता हुआ दिखाई देता है। ग्रामीण समाज के लोग किसी प्रकार की गंभीर व्याधि को भी ईश्वरोया प्रकोप या किसी के द्वारा किया गया टोना,टोटका ही मानते हैं और अस्पताल में इलाज करवाने से ज्यादा महत्व तंत्र मंत्र और जादू टोने को देते हैं। शिवानी की कई कहानियों में ऐसे परिओवेश का चित्रण हुआ है जिनमें किसी को कोई व्याधि है और वह इलाज कराने के बजाय जादू टोने में भरोसा करके ओझा, सोखा के पास जाती है। परिणाम होता है कि वह अपने जीवन से हाथ धो बैठता है। ऐसा करते हुए शिवानी जी ने दो काम किया है। एक तो सामाजिक कुरीति का चित्रण और दूसरा उस परिवेश का चित्रण जिसमें ऐसे लोग उपस्थित हैं।

इस प्रकार हम देखते हैं कि मन्नू भंडारी और शिवानी की कहानियों में परिवेशबोध नई कहानी आंदोलन से जुड़े उन कथानक रूढ़ियों को व्यक्त करता है जो नई कहानी की अपनी विशिष्ट विशिष्टता है। दोनों ही कथाकारों ने नई कहानी के मुहावरों का सफल प्रयोग करते हुए अपने लेखन के लिए परिवेश का निर्माण किया है। जहां मन्नू भंडारी की कहानियों में शहरी मध्यवर्गीय जीवन का यथार्थ व्यक्त हुआ है वही शिवानी के लेखन में पहाड़ का परिवेश मौजूद दिखता है। इन दोनों ही कथा कारों ने अपने परिवेश निर्माण के लिए यथार्थ जीवन का सहारा लिया है।

संदर्भ ग्रंथ:-

1. कहानी: स्वरूप और संवेदना, राजेंद्र यादव, राजकमल प्रकाशन समूह, नई दिल्ली ।
2. कहानी नई कहानी,नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन समूह, नई दिल्ली।
3. नई कहानी की भूमिका, कमलेश्वर,राजकमल प्रकाशन समूह, नई दिल्ली।
4. हिंदी कहानी, संवेदना और शिल्प, डॉ. शिवशंकर पाण्डेय, ज्ञान प्रकाशन कानपुर।
5. मन्नू भंडारी का कथा साहित्य, संवेदना और शिल्प,डॉ भूमिका पटेल, चिंतन प्रकाशन, कानपुर।
6. उपन्यासकार शिवानी, संवेदना और शिल्प,नज़मा अंसारी, चिंतन प्रकाशन, कानपुर।